गंधर्वि कथक नृत्यालय
gandharvinrutyalaya@gmail.com
+91 75885 79928

अ. भा. गांधर्व मंडल मुंबई
कथक नृत्य
विशारद पूर्ण वर्ष परीक्षा

पूर्णांक – 400	न्यूनतम् – 180
क्रियात्मक - 250 (क्रिया -200, मंच प्रदर्शन 50)	न्यूनतम् – 128
शास्त्र - 150	न्यूनतम् – 72

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

प्राचीन नृत्य संबंधी घटनाओं की जानकारी।मध्ययुगीन ग्रंथों की जानकारी।
नव रसों का पूर्ण ज्ञान।
नायिका भेद का विस्तृत ज्ञान
धर्मभेद से नायिका _ स्वकिया, परकिया, सामान्य।
आयु विचार से नायिका _ मुग्धा, मध्य, प्रौढ़ा।
प्रकृति अनुसार नायिका _ उत्तमा, मध्यमा, मध्यमा।
जातिभेद से नायिका _ पद्मिनी, चित्रिनी, शंखिनी और हस्तिनी।
परिस्थिति अनुसार आष्टा नायिकाओं में से कलहांतरीता, वासकसज्जा, विराहोत्कठीता, स्वाधिनपतिका।
उड़ीसी, कुचिपुड़ी तथा मोहिनीअट्टम नृत्य की व्याख्या तथा वादि व वस्त्रों की जानकारी।
लाय और ताल का उद्गम तथा कथक नृत्य में महत्व।
नाट्य शास्त्र तथा अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त और और असंयुक्त मुद्राओं का तौलनिय अभ्यास।
रामायण, महाभारत, भागवत पुराण तथा गीत गोविंद की संक्षेप में जानकारी।

Gandharvi Kathak Nrutyalaya

Watch us on YouTube Jasmin's Gandharvi Nrutyalaya

द्वितीय प्रश्न पत्र
अंक ७५
न्यूनतम २६

निम्नलिखित पात्रों की मुद्राएं अभिनय दर्पण अनुसार _ ब्रह्मा, विष्णु, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी, इंद्र, अग्नि, यम, वरुण, वायु तथा दशावतार संबंधी (मत्स्य कुरमा वराह नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि)
पौराणिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ।
जीवनिया _ गुरु सुंदर प्रसाद, गुरु मोहनराव कल्याणपुरकर, महाराज कृष्ण कुमार, पंडित बिरजू महाराज।
नृत्य में लोकाधर्मी नाट्यधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग।
विदेशों में भारतीय नृत्य कला की लोकप्रियता।
आधुनिक काल में नृत्य में विकसित होने वाले नई तकनीक तथा उनका स्वरूप (ध्वनि संयोजन, प्रकाश सज्जा, नेपथ्य, साइक्लोरामा, स्लाइड्स आदि)
कथक नृत्य में कविता तथा ठुमरी का स्थान।
गायन, वादन, चित्रकला, मूर्तिकला तथा साहित्य का नृत्य से संबंध।
मत्ततात (१८), रासताल (१३), में आमद, तोड़ा, परन, चक्करदार तोड़ा, फरमाईशी परन, परमेलू आदि।

क्रियात्मक
विष्णु वंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी)।
छोटी सवारी (१५), शिखर (१७), मत्ततात (१८), रासताल (१३) में विशेष तयारी।
तिनताल, रूपक, झपताल की सादी ठेके पर नाचना।
छोटी-छोटी कथाओपर नृत्य निर्मिती करना।
तत् कार में बाट, लडी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन।
गतभाव में दक्षता, कंचन मृग (सीता हरण तक) और कंसवध (कथा कहकर अभिनय अनिवार्य)।
बैठकर ठुमरी या पद की पंक्ति पर अनेकों प्रकार से संचारी भाव का विस्तार करना।
सभी तालों की रचनाओं को ताल देकर पढना।
त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदि में से किन्ही दो का प्रदर्शन (राग, ताल, शब्द परिचय)।
नव रसों को बैठकर केवल चेहरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता।
दशावतार से संबंधी किसी रचना पर प्रदर्शन (रचनाकार, राग, ताल, शब्द परिचय)।
तीनताल में लय के साथ भृकुटी, ग्रीवा आदि का संचलन।
तीनताल का नगमा, लहरा या गाने बजाने की क्षमता।
परीक्षक द्वारा दिए गए प्रसंग को तुरंत प्रस्तुति करना।
आष्टनायिकाओं पर भव्य प्रस्तुति

Gandharvi Kathak Nrutyalaya